International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(I), October - December, 2025, pp. 50-58

उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास में महाकुंभ प्रयागराज 2025 की भूमिका

विपिन कन्नौजिया[1] | डॉ. विशाल सिंह[2*]

[1]शोध छात्र, वाणिज्य विभाग, टी.डी.पी.जी. कॉलेज, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्विद्यालय, जौनपुर।
[2]सहायक आचार्य, वाणिज्य विभाग, टी.डी.पी.जी. कॉलेज, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्विद्यालय, जौनपुर।

[*]Corresponding Author: vishalsinghadc@gmail.com

Citation: कन्नौजियाविपिन, & सिंहविशाल. (2025). उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास में महाकुंभ प्रयागराज 2025 की भूमिका. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(I)), 50–58. https://doi.org/10.62823/ijemmasss/7.4(i).8208

सार

कुंभ मूलतः एक धार्मिक आयोजन है, लेकिन इसका सामाजिक–आर्थिक महत्व बहुत अधिक है और राज्य रोजगार सृजन, सामाजिक – आर्थिक विकास तथा उत्तर प्रदेश की सकारात्मक छवि बनाने के लिए इसकी धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन क्षमता का दोहन करने हेतु महाकुंभ को बढ़ावा दे रहा उत्तर प्रदेश प्राचीन काल से ही भारत में सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटन स्थलों में से एक रहा है इतिहास से भरा यह राज्य महत्वपूर्ण मंदिरों और धार्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है जो तीर्थ यात्रियों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ हैं उत्तर प्रदेश के प्रमुख धार्मिक आयोजन में से एक है महाकुंभ प्रयागराज का आयोजन, सामान्यतः प्रयागराज में तो प्रत्येक वर्ष माघ मेले का आयोजन होता है जिसमें लाखों की संख्या में देश–विदेश के तीर्थ यात्री आते हैं लेकिन अर्ध कुंभ, कुंभ और महाकुंभ का आयोजन एक विशेष समय में होता है जो भारतीय तीर्थ यात्रियों के साथ–साथ विदेशी तीर्थ यात्रियों के विशेष आकर्षण का केंद्र बनता है जो उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य शोधार्थी द्वारा उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास में महाकुंभ प्रयागराज 2025 की भूमिका का अध्ययन करना है।

शब्दकोशः *कुंभ, आर्थिक विकास, धार्मिक पर्यटन, संगठित तथा असंगठित क्षेत्र।*

प्रस्तावना

गंगा यमुना एवं सरस्वती के संगम पर विराजित प्रयाग सभ्यता के उषाका से ही भारतीय संस्कृति का अमर वाहक और आधार स्तंभ रहा है। यह हमारे राष्ट्र तथा संस्कृति की पहचान, प्रतीक व पुरातन परंपरा का निर्वाहक रहा है। प्रयागराज को शास्त्रों में तीर्थराज की उपाधि से अलंकृति किया गया है। यह हमारी संस्कृति अस्मिता व मूल्यों का संरक्षक, संवर्धक व पोषक रहा है। यही कारण है कि पुरातन काल से लेकर अब तक प्रतिज्ञा साहित्यिक मनीषियों के लिए भी श्रद्धा एवं आस्था का केंद्र होने के साथ–साथ उनके प्रमुख विवेच्य भी रहा है। अतः वैदिक वाङ्मय से लेकर आधुनिक संस्कृत साहित्यपर्यंत इस पुण्य और पवित्र क्षेत्र की चर्चा एवं प्रशस्तिगायन स्वाभाविक ही है। सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलयुग इन चार युगों में अक्षय पुण्य रखने वाली इस धरती को अक्षय क्षेत्र के नाम से जाना जाता रहा है भारतीय संस्कृति के प्राण, वेदों में भी इसकी महिमा निहित है।

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

"ग्रहाणां च यथा सूर्यो नक्षत्राणां यथा शशी। तीर्थानामुत्तमं तीर्थे प्रयागाख्यमनुत्तमम्।" अर्थात– जैसे ग्रहों में सूर्य तथा नक्षत्रों में चन्द्रमा हैं, वैसे ही तीर्थों में प्रयाग सर्वोत्तम है।"1 यहां धर्म एवं संस्कृति का अनूठा इतिहास छिपा है। यह राजनैतिक इतिहास का भी जीता–जागता केन्द्र रहा है। पौरव वंश केजनक पुरू की राजधानी प्रतिष्ठानपुर आज भी ध्वंसावशेष के रूप में हमारे सामने हैं। दुष्यंत, शकुन्तला, भरत की कहानी कहने वाले इस प्रतिष्ठानपुर में इतिहास का अक्षय भंडार छिपा है। हंस तीर्थ, समुद्र कूप, वेद व्यास पाठशाला सरीखे जाने कितने ऐतिहासिक तथ्य झूसी के खंडहरों में समाए हुए हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के वन–गम, श्रृंगी ऋषि की तपोभूमि श्रृंगवेरपुर के समीप केवट का अटूट प्रेम, भारद्वाज आश्रम एवं चित्रकूट गमन की जीवंत कहानी का वर्णन, महर्षि वाल्मीकि तथा गोस्वामी तुलसीदास ने जिन शब्दों में किया है उसे पढ़कर प्रयाग का अतंत वैभव मन को झकझोर देता है महाकवि कालिदास ने 'रघुवंश' में संगम का जीत जागता चित्रण किया है य प्रयाग भारत का प्राण।

महाकुंभ

आधुनिकता की भागदौड़ से भरी दुनिया में, कुछ ही आयोजन करोड़ों लोगों को अपने से बड़ी किसी चीज की तलाश में एक साथ लाने की ताकत रखते हैं। वर्तमान में 13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 तक आयोजित हुआ महाकुंभ मेला एक पवित्र तीर्थयात्रा है जिसे 12 वर्षों के दौरान चार बार मनाया जाता है। दुनिया का सबसे बड़ा शांति पूर्ण समागम, कुंभ मेला करोड़ों तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है जो पापों से खुद को शुद्ध करने और आध्यात्मिक मुक्ति पाने के लिए पवित्र नदियों में स्नान करते हैं। महाकुंभ मेला हिंदू पौराणिक कथाओं में गहराई से समाया हुआ है और दुनिया में आस्था के सबसे महत्वपूर्ण समागमों में से एक है। यह पवित्र आयोजन भारत में चार स्थानों –हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज में एक–एक करके होता है, जो क्रमशः गंगा से लेकर शिप्रा, गोदावरी और प्रयागराज गंगा , यमुना और पौराणिक सरस्वती के संगम तक पवित्र नदी के किनारे स्थित है।

महाकुंभ केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं है, बल्कि एक सामाजिक–सांस्कृतिक परिघटना है। इस अवसर पर लाखों तीर्थयात्रियों, संतों, योगियों और आगंतुकों का आगमन होता है, जो भारत की धार्मिक–सांस्कृतिक विविधता का एक सूक्ष्म रूप प्रस्तुत करता है। शाही या अमृत स्नान से लेकर विभिन्न हिंदू संप्रदायों के सत्संगों तक, इसकी परंपराएँ सनातन धर्म की भावना को प्रकट करती हैं, साथ ही एकता और सद्भावना को समृद्ध करती हैं। यह उत्सव भारत की विविधता, एकता और धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है।

साहित्य का पुनरावलोकन

डॉ. अजीत ने अपने शोध पत्र (2025) में बताया की आने वाले कल्पवासी (तीर्थयात्री) में अधिकांश कल्पवासी शिविरों में ठहरने के लिए, तथा तीर्थयात्रा से सम्बन्धित सुविधाओं की अग्रिम बुकिंग का विकल्प चुनते हैं।

उदय जैन के अनुसार (2025)" प्रयागराज में कुंभ मेला 2025 आध्यात्मिक और आर्थिक विकास का उल्लेखनीय मिश्रण होगा। लाखों तीर्थयात्री और पर्यटक को आकर्षित करने वाला यह आयोजन पर्यटन, बुनियादी ढांचे, खुदरा और परिवहन क्षेत्रों में वृद्धि को बढ़ावा देगा, साथ ही पर्याप्त राजस्व भी पैदा करेगा। यह सांस्कृतिक आदान– प्रदान को भी बढ़ावा देगा, जिससे दुनिया भर के लोग आस्था के साझा उत्सव में एक साथ आयेगे। स्थिरता और सामाजिक सद्भाव के सावधानीपूर्वक योजना के साथ, 2025 का कुंभ मेला एक स्थायी विरासत छोड़ जाएगा, जिससे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और इसके आध्यात्मिक महत्व दोनों को बढ़ावा मिलेगा।

गोस्वामी तुलसीदास जी तीर्थराज (प्रयागराज) की सम्पन्नत के बारे में कहा हैं कि "चारि पदारथ भरा भँडारू। पुन्य प्रदेस देस अति चारू।" अर्थात– यह ऐसा पुण्य प्रदेश है, जो चारों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) से परिपूर्ण है। यहाँ पदारथ का अर्थ पुरुषार्थ है।

अध्ययन का उद्देश्य

- महाकुंभ नगर तथा प्रयागराज में आने वाले तीर्थयात्रियों के आकर्षण केंद्र की खोज करना।
- महाकुंभ में आने वाले तीर्थयात्रियों से उत्तर प्रदेश पर पड़ने वाले आर्थिक प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध विषय के अध्ययन हेतु महाकुंभ नगर (प्रयागराज) का महाकुंभ 2025 के दौरान अध्ययन करना।

महाकुम्भ नगर की संरचना

उत्तर प्रदेश सरकार ने महाकुम्भ नगर को राज्य का 76 वॉ अस्थायी जिला बनाया है, जिसमें प्रयागराज जनपद की चार तहसीले– सदर, करछना, फूलपुर, सोरांव को शामिल किया गया है इसमें–

- कुल उपनगर–7
- कुल राजस्व गांव–67
- कुल पुलिस थाने–56
- कुल पुलिस चौकी–133
- कुल सेक्टर–25
- कुल पीपा के पुल–30 (लगभग 5000 पंटूनो का उपयोग)
- कुल टेंटो की संख्या लगभग 1,60,000 जिसमें "महाकुंभ ग्राम" लक्जरी टेंट सिटी जैसे सुपर डीलक्स आवास भी शामिल है।
- महाकुंभ नगर से जुड़े 92 सड़कों का नवीनीकरण और 17 प्रमुख सड़कों का सुंदरीकरण के साथ लगभग 400 km सड़क नेटवर्क है।
- 1532 किलोमीटर बिजली नेटवर्क के साथ, 6700 स्ट्रीट लाइट, 85 अस्थायी बिजली घर और 170 सब स्टेशन बनाया गया है
- जल निगम द्वारा लगभग 1250 किलोमीटर पेयजल पाइप लाइन के साथ 200 वाटर एटीएम लगाएं गए है।
- महाकुम्भ नगर में स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए लगभग 1,50,000 शौचालय, 10,000 चेंजिंग रूम, 850 समूहों में 10,200 स्वच्छताकर्मी, 25,000 लाइनर बैगयुक्त डस्टबिन, 160 कचरा प्रबंधन वाहनों की व्यवस्था की गई है।
- मेला क्षेत्र में कुल 102 पार्किंग स्थल बनाए गए है।
- तीर्थयात्रीयो की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए मेला क्षेत्र में 43 अस्थायी अस्पताल बनाए गए है, इसके साथ–साथ 125 रोड एंबुलेंस, 7 रिवर एंबुलेंस, एक एयर एंबुलेंस की उपलब्धता है।

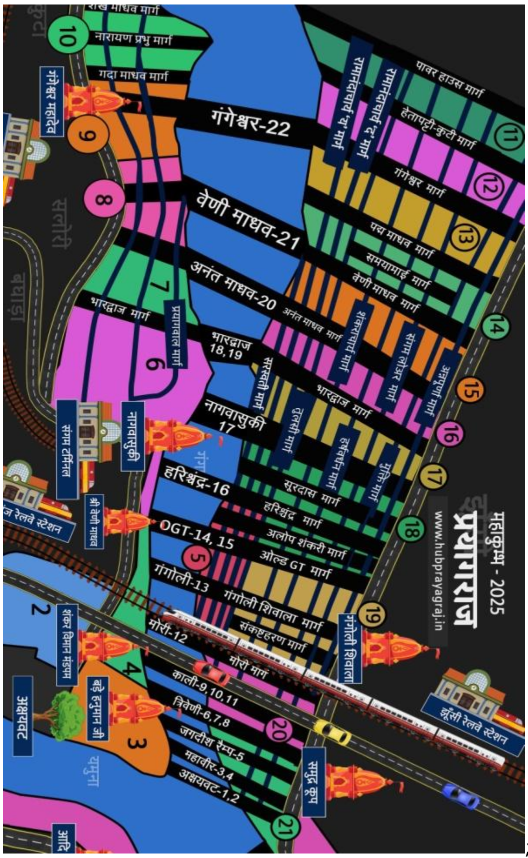

मानचि – महाकुंभ नगर

प्रमुख स्नान तिथि

लगभग 45 दिन तक आयोजित महाकुंभ मेले में प्रतिदिन लाखों की संख्या में तीर्थयात्री आए लेकिन प्रमुख स्नान तिथियों के दिन यह संख्या करोड़ों में थीं जिनके आंकड़े निम्नवत है

तिथि	**प्रमुख स्नान का अवसर**	**स्नान करने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या (अनुमानित)**
13 जनवरी 2025	पौष पूर्णिमा (यह मेले का अनौपचारिक उद्घाटन है)	1.5 करोड़
14 जनवरी 2025	मकर संक्रांति	3.5 करोड़
29 जनवरी 2025	मौनी अमावस्या	5 करोड़
3 फरवरी 2025	बसंत पंचमी	2.33 करोड
12 फरवरी 2025	माघी पूर्णिमा	2 करोड़
26 फरवरी 2025	महाशिवरात्रि (इस मुख्य स्नान से कुंभ मेले का समापन हो जाता है)	1.3 करोड

स्रोत –महाकुंभ मेला प्रशासन द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार

उपरोक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि 45 दिन तक आयोजित इस महाकुम्भ में लगभग 66 करोड़ (**औसतन 1.46 करोड़ प्रतिदिन**) तीर्थयात्री आए।

महाकुंभ में तीर्थयात्रियों के आकर्षण के केंद

पुरातन संस्कृति के उद्भव और विकास की साक्षी प्रयागराज नगरी में तीन पवित्र नदियों का संगम स्थली है। यहां शक्तिपीठ है तो अनादिकाल से अक्षयवट भी है, ऐसे ही अगाध आस्था तथा आध्यात्मिक–सांस्कृतिक महत्व के पुरातन स्थलों का राज्य सरकार द्वारा सौंदर्यीकरण कराया गया है। प्रयागराज एक मात्र ऐसा नगर है, जहां 11 धार्मिक कॉरीडोर है

- भारद्वाज आश्रम कॉरीडोर
- लेटे हनुमान मंदिर कॉरीडोर
- सरस्वती कूप कॉरीडोर
- अक्षयवट कॉरीडोर
- पातालपुरी मंदिर कॉरीडोर
- शक्तिपीठ आलोपशंकरी देवी कॉरीडोर
- नागवासुकि कॉरीडोर
- पड़िला महादेव कॉरीडोर
- मनकामेश्वर महादेव कॉरीडोर
- द्वादश माधव कॉरीडोर
- कोटेश्वर महादेव कॉरीडोर

सांस्कृतिक कार्यक्रम भक्ति और विरासत का उत्सव

महाकुंभ मेला में तीर्थयात्रियों को आस्था और संस्कृति का अद्वितीय अनुभव प्रदान करने वाला गंगा पंडाल मेला क्षेत्र के सेक्टर न. 1 के परेड ग्राउंड में 10,000 लोगों की क्षमता के साथ बनाया गया था, जो भारत के के प्रसिद्ध कलाकारों की भव्य प्रस्तुति का केंद्र बना। वहीं, त्रिवेणी मंच, अरैल मंच और झूसी मंच जैसे छोटे पंडाल 2,000 दर्शकों की क्षमता के साथ कुल 24 मंच पर लोक संगीत, शास्त्रीय नृत्य और काव्य पाठ जैसे कार्यक्रमों से विशेष अनुभव मिला। महाकुंभ केवल धार्मिक आयोजन ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और परम्पराओं का जीवन्त उत्सव रहा।पद्म पुरस्कार से सम्मानित व अन्य कलाकारों की भी प्रस्तुति रही य

- 24 जनवरी 2025 को अनुपेशा दत्ता, पुरू दधीच
- 25 जनवरी 2025 को रवि त्रिपाठी, शोवाना नारायण
- 26 जनवरी 2025 को साधना सरगम, दीपिका रेड्डी
- 27 जनवरी 2025 को शान, मालिनी अवस्थी
- 31 जनवरी 2025 को हेमा मालिनी, रजनी एवं गायत्री
- 7 फरवरी 2025 को डोना गांगुली, योगेश्वर गंधर्व
- 8 फरवरी 2025 को कविता कृष्णमूर्ति, डॉ. एल. सुब्रमण्यम
- 9 फरवरी 2025 को सुरेश वाडेकर, सोनल मानसिंह
- 10 फरवरी 2025 को हरिहरन, शुभादा वाडेकर
- 14 फरवरी 2025 को नवदीप वडाली, बनाश्री राव
- 15 फरवरी 2025 को देबमित्रा सेनगुप्ता, रंजना गौहर

- 17 फरवरी 2025 को नितिन मुकेश, अनिठा गुहा
- 21 फरवरी 2025 को कविता सेठ, उमामहेश्वरी
- 23 फरवरी 2025 को कैलाश खेर, शर्मिला विश्वास
- 24 फरवरी 2025 को मोहित चौहान, सुचेता भिड़े चापेकर

कला कुंभ प्रदर्शनी (संस्कृति मंत्रालय द्वारा स्थापित)

सेक्टर न. 7 में दो लाख वर्ग फीट में कला कुंभ प्रदर्शनी की स्थापना, प्रवेश द्वार पर कलाकृतियों के माध्यम से समुद्र मंथन को दर्शाया गया है। महाकुम्भ में आने वाले तीर्थयात्री यहां सांस्कृतिक विरासत एवं कलाओं को देखा, साथ ही कुंभ और महाकुंभ से सम्बन्धित पांडुलिपियों, धार्मिक साहित्य और अभिलेखों का संग्रह वहां था।

एआर शो (उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित)

कुम्भ के इतिहास, पुरानी कथाओं और महत्व के साथ–साथ सांस्कृतिक धरोहर की प्रतीक कलाकृतियों प्राचीन मूर्तियों का थ्री डी (3डी) स्कैनिंग के माध्यम से प्रदर्शन किया गया।

कला और अभिलेख

कुंभ की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर पर गहरी जानकारी देने वाली प्रदर्शनी।

ऐतिहासिक स्थल

- अशोक स्तंभ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और स्वराज भवन, जो भारत की झलक प्रदान करते है।
- सांस्कृतिक जीवंतता चहल पहल भरी सड़कें, बाजार, स्थानीय कला और व्यंजन शहर के जीवन की झलक प्रदान करते है ।
- गंगा आरती एक आश्चर्यजनक अनुष्ठान, जिसमे पुजारी पवित्र नदी में जगमगाते दीपकों से आरती करते है, जिससे भक्ति की भावना जागृत होती है।

अर्थ का महाकुंभ

महाकुंभ के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आवंटित बजट

- 2022–23 में 621 करोड़
- 2023–24 में 2,500 करोड़
- 2024–25 में 2,500 करोड़

कुल बजट लगभग 5,621 करोड़ रुपए का रहा जो महाकुंभ मेले आयोजन हेतु विभिन्न योजनाओं पर खर्च किया गया। जिससे 3 लाख करोड़ रुपए का राजस्व लगभग प्राप्त होने का अनुमान लगाया गया है।

कुंभ 2013 में राज्य सरकार ने कुल लगभग 1,200 करोड़ रुपए खर्च करके लगभग 12,000 करोड़ रुपए का राजस्व प्राप्त किया था।

कुंभ 2019 में राज्य सरकार ने कुल लगभग 4,200 रुपए खर्च करके लगभग 1.2 लाख करोड़ रुपए का राजस्व प्राप्त किया था।

यातायात

- **सड़क**
  - उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग की ओर से कुम्भ मेले के लिए 7,000 स्पेशल बसे जिसमे 550 शटल बसों का भी संचालन किया गया।

- प्रयागराज में 7 नए बस स्टैंड बनाए गए ।
- 1,850 हेक्टेयर में 100 से अधिक पार्किंग स्थल बनाए गए ।
- महाकुंभ के दौरान प्रयागराज से उत्तर प्रदेश के सभी जिलों के लिए बस की सुविधा उपलब्ध रही।
- परिवहन निगम के एम.डी. मासूम अली ने बताया कि मेले के दौरान 3.15 करोड़ लोगों ने परिवहन निगम की बसों से यात्रा की।

- **रेल**
  - भारतीय रेलवे द्वारा मेले के दौरान कुल 13,335 ट्रेनों का संचालन किया। जिसमें से 3,300 स्पेशल ट्रेनों का संचालन हुआ
  - उत्तर मध्य रेलवे के द्वारा रिंग रेल मेमू सर्विस का भी संचालन किया गया।
- **वायु**
  - महाकुंभ के दौरान प्रयागराज एयरपोर्ट पर यात्रियों की आवाजाही में अभूतपूर्व वृद्धि हुई
  - महाकुंभ के दौरान प्रयागराज एयरपोर्ट दुनिया के व्यस्त एयरपोर्ट में से एक रहा।
  - 48 दिनों में 5363 उड़ाने और 5,74,788 यात्रियों का आवागमन हुआ।
  - 21 फरवरी 2025 को रिकॉर्ड 236 विमानों द्वारा 24,512 यात्रियों का आवागमन हुआ।

एक जिला एक उत्पाद प्रदर्शनी

मेला क्षेत्र के सेक्टर न. 1 में लगभग 6,000 वर्ग मीटर में वकवच की प्रदर्शनी प्रदर्शित की गयी जिसमें प्रदेश के सभी जिलों से सम्बन्धित उत्पाद रहे।

महाकुंभ 2025 देशभर के कारीगरों के लिए एक सुनहरा अवसर साबित हो रहा है। प्रयागराज में संगम पर आयोजित इस भव्य आयोजन में 6000 वर्ग मीटर में फैली 'एक जिला, एक उत्पाद' (व्क्व्) की शानदार प्रदर्शनी लगाई गई है। कालीन, जरी–जरदोजी, फिरोजाबाद के कांच के खिलौने, वाराणसी के लकड़ी के खिलौने और अन्य हस्तशिल्प उत्पाद श्रद्धालुओं के लिए मुख्य आकर्षण बन रहे हैं।

प्रयागराज मंडल के संयुक्त उद्योग आयुक्त शरद टंडन ने बताया कि 2019 में कुंभ मेले में 4.30 करोड़ रुपए का कारोबार हुआ था, इस बार यह कारोबार 35 करोड़ रुपए तक पहुंचने की उम्मीद है। इससे कारोबार और रोजगार सृजन के नए रास्ते खुलेंगे।

एक जिला एक उत्पाद प्रदर्शनी की यह पहल हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने का एक अभूतपूर्व प्रयास है। महाकुंभ 2025 न केवल आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत कर रहा है, बल्कि उद्यमियों के लिए भी एक व्यापक मंच बन गया है। दुनिया भर से लोग यहाँ आ रहे हैं, कारीगरों के उत्पादों को देख रहे हैं और खरीद रहे हैं।

प्रदर्शनी में काशी (वाराणसी) के कारीगरों ने लकड़ी के खिलौने, बनारसी ब्रोकेड, मेटल रिपोसे और मेटल कास्टिंग सहित कई उत्पाद पेश किए हैं। भौगोलिक संकेत विशेषज्ञ डॉ. रजनीकांत ने बताया कि ओडीओपी योजना के तहत उत्तर प्रदेश के 75 जीआई उत्पादों को प्रदर्शित किया जा रहा है, जिनमें से 34 उत्पाद काशी क्षेत्र के ही हैं। इनमें वाराणसी की लाल मिर्च, बनारसी साड़ियाँ, सुर्खा अमरूद, प्रतापगढ़ का आंवला, मिर्जापुर के पीतल के बर्तन और गोरखपुर के टेराकोटा आइटम शामिल हैं। कुशीनगर के कालीन, फिरोजाबाद के कांच के खिलौने और बर्तन भी प्रदर्शनी में मुख्य आकर्षण हैं। बनारसी ठंडाई, लाल पेड़ा, बनारसी तबला और दीवार पेंटिंग जैसी अनूठी कृतियों को वैश्विक ध्यान में लाने का प्रयास किया जा रहा है।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग

मेला क्षेत्र के सेक्टर न.1 के आयोजित इस प्रदर्शनी में कुल 152 स्टॉल, जिनमें से 98 स्टॉल पर खादी उत्पाद और 54 स्टॉल पर ग्रामोद्योग के उत्पाद प्रदर्शित किए गए।

इस प्रदर्शनी में 20 से अधिक राज्यो के उत्पादों को शामिल किया गया।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई) के खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) के अध्यक्ष मनोज कुमार ने कहा कि 14 जनवरी से 27 फरवरी, 2025 तक महाकुंभ के दौरान प्रयागराज में एक राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। पीएम की 'खादी क्रांति' के परिणामस्वरूप, प्रदर्शनी में 12.02 करोड़ रुपये के खादी उत्पादों की ऐतिहासिक बिक्री दर्ज की गई।

इन्होंने बताया कि प्रदर्शनी में खादी के 98 स्टॉल और ग्रामोद्योग के 54 स्टॉल थे, जिनमें खादी उत्पादों की कुल बिक्री 9.76 करोड़ रुपये और ग्रामोद्योग उत्पादों की बिक्री 2.26 करोड़ रुपये रही।

- **अखिल भारतीय व्यापारी परिसंघ** का अनुमान है कि अकेले खाद्य और पेय क्षेत्र से 20,000 करोड़, परिवहन और रसद साथ ही पर्यटन सेवाएं प्रत्येक 10,000 करोड़ का योगदान देगी। प्रचार गतिविधियों के माध्यम से मनोरंजन और मीडिया से 10,000 करोड़, अस्थाई चिकित्सा शिविरों से, आयुर्वेद उत्पादों और दवाओं से 3,000 करोड़ रुपए का आय होने की संभावना बताई गई।
- **सी ओ डी गौरव कुमार** ने बताया कि, तंबुओं की नगरी को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए प्लास्टिक व फोम के पत्तल, दोना और गिलास आदि का उपयोग नहीं किया जाएगा। इसके विकल्प के रूप में पत्तों के पत्तल, दोना तथा कुल्हड़ को रखा गया है। पत्तल–दोना, कुल्हड़, जुट बैग, कपड़े के थैले के लिए उत्तर प्रदेश के 28 जिलों के साथ ही प्रदेश के बाहरी कुछ जिलों के महिलाओं को जिम्मेदारी दी गई है, इसमें 14 हजार महिला स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी लगभग 1.25 लाख महिलाओं को इसे तैयार करने के लिए लगाया गया है।
- महाकुंभ में संगठित क्षेत्रों के साथ–साथ असंगठित क्षेत्रों जैसे फूलमाला, पूजा सामाग्री, ई रिक्शा चालक, चलते फिरते छोटे–छोटे स्टॉल (जिसमे दैनिक जीवन में जरूरतो की वस्तु), खिलौने वाले इत्यादि प्रकार के लोगों को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से लाखों की संख्या में रोजगार मिला ।

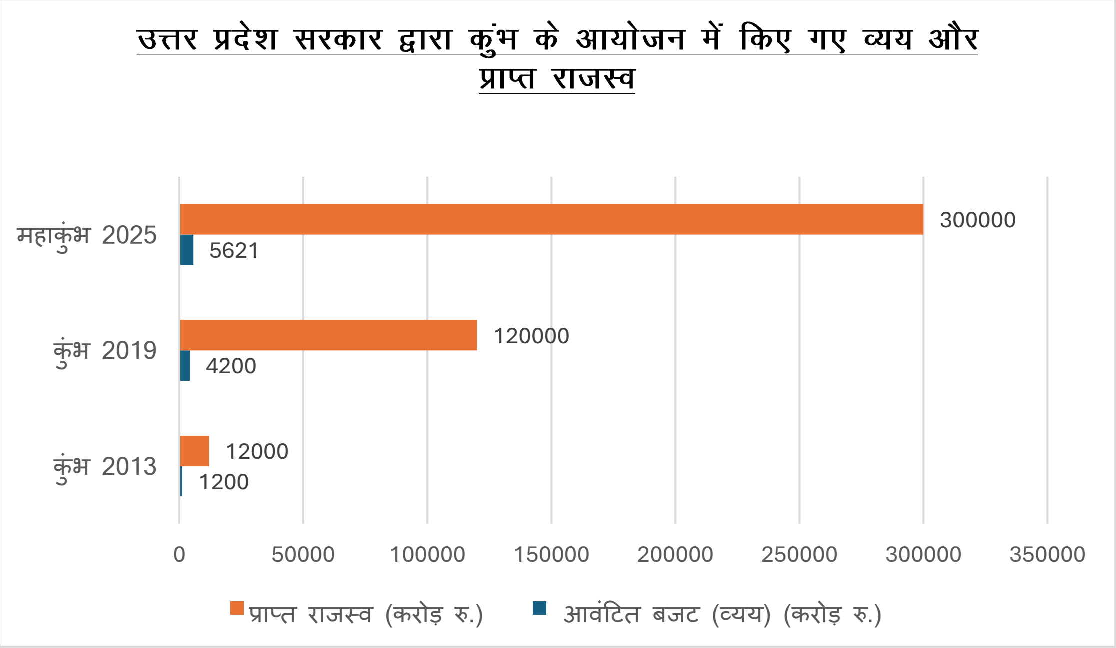

चित्र 1

स्रोत– उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार

निष्कर्ष

- उत्तर प्रदेश सरकार को लगभग 3 लाख करोड़ रुपए का राजस्व प्राप्त होने का अनुमान है।
- एक जिला एक उत्पाद प्रदर्शनी का मेले में लगभग 35 करोड़ का कारोबार हुआ।
- खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी में लगभग 12.02 करोड़ का कारोबार हुआ।
- प्रयागराज महाकुंभ 2025 से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 8 लाख लोगों को रोजगार मिला।

2025 के महाकुंभ आयोजन ने उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास में सकारात्मक योगदान दिया है। इस धार्मिक आयोजन की विशालता ने न केवल दुनिया भर से लाखों तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित किया है, बल्कि इस क्षेत्र में आर्थिक विकास के लिए उत्प्रेरक का काम भी किया है। पर्यटकों के आगमन ने राज्य के पर्यटन उद्योग को काफी बढ़ावा दिया है, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय व्यवसायों, होटलों और परिवहन सेवाओं के राजस्व में वृद्धि हुई है। इस आयोजन ने परिवहन प्रणालियों के सुधार और अस्थायी व स्थायी आवासों के निर्माण सहित बुनियादी ढाँचे के विकास को भी गति दी है, जिससे राज्य के आर्थिक परिदृश्य पर एक स्थायी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इसके अलावा, महाकुंभ 2025 के सफल आयोजन ने न केवल राज्य की बड़े पैमाने पर आयोजनों की मेजबानी करने की क्षमता को प्रदर्शित किया है, बल्कि उत्तर प्रदेश को धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन के लिए एक प्रमुख गंतव्य के रूप में भी स्थापित किया है। इसने, बदले में, निरंतर आर्थिक लाभ का मार्ग प्रशस्त किया है, क्योंकि इस आयोजन से प्राप्त बढ़ी हुई दृश्यता और प्रतिष्ठा से आने वाले वर्षों में निरंतर पर्यटन और निवेश आकर्षित होने की उम्मीद है। महाकुंभ के आर्थिक प्रभाव इस आयोजन से कहीं आगे तक फैलने की उम्मीद है, और इस आयोजन की सफलता के परिणामस्वरूप राज्य दीर्घकालिक आर्थिक वृद्धि और विकास का अनुभव करने के लिए तैयार है।

संक्षेप में, महाकुंभ 2025 का उत्तर प्रदेश पर सकारात्मक आर्थिक प्रभाव पड़ा है, जिसने भविष्य में इसी तरह के बड़े पैमाने के आयोजनों के लिए एक मानक स्थापित किया है और अंतर्राष्ट्रीय यात्रा और आतिथ्य क्षेत्र में एक प्रमुख भागीदार के रूप में राज्य की स्थिति को बढ़ाया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://kumbh.gov.in/।
2. https://prayagraj.nic.in/maha-kumbh-mela-2025/
3. https://www.mahakumbhjnup.in/
4. https://uptourism.gov.in/en/article/kumbh-2025
5. vej mtkyk ç;kxjkt egkdqaHk {ks= fo'ks"k vad
6. https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2106476
7. https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2025/feb/doc2025226509201.pdf
8. https://timesofindia.indiatimes.com/city/varanasi/more-than-13-crore-tourists-visited-varanasi-in-past-two-years-says-govt/articleshow/106140454.cms
9. https://www.academia.edu/7359443/SOCIO_ECONOMIC_DIMENSIONS_OF_KUMBH_MELA_2013_AND_THE_ORGANIZATIONAL_ASPECT_OF_IT_A_STUDY

❑❑❑